राजस्थान की जनजातियों की सामाजिक मान्यताएं

Raju Nain

M. A. (Sociology) from S. B. R. M. Govt. College, Nagaur during year 2021
B.Ed. from Maa Sharda B.Ed College, Deh,Nagaur during year 2018

सार

राजस्थान की प्रमुख जनजातियों (मीणा, भील, सहरिया) में प्रकृति प्रेम, संयुक्त परिवार, और अनोखी विवाह व न्याय प्रणालियाँ उनकी अनूठी सामाजिक पहचान हैं। [1]सामाजिक संगठन और पंचायत व्यवस्था-गामेती और मुखिया: भील समाज के गाँव के मुखिया को 'गामेती' कहा जाता है, जबकि सहरिया जनजाति में पंचायत व्यवस्था तीन स्तरों—पंचताई, एकादसिया और चौरासी में बंटी होती है। [1, 2]गोत्र व नाता प्रथा: इन समाजों में गोत्र बाहर विवाह (गोत्र-बहिर्विवाह) का नियम होता है। कई जनजातियों में आपसी सहमति से संबंध बदलने या 'नाता प्रथा' जैसी सामाजिक मान्यताएँ आज भी मान्य हैं। [1, 2]छेड़ा फाड़ना: भील जनजाति में तलाक की एक सामाजिक परंपरा है जिसे 'छेड़ा फाड़ना' कहा जाता है।

परिचय

राजस्थान में अनेक आदिवासी समुदाय निवास करतें आए हैं। इन समुदायों में सबसे प्रमुख जनजातियां भील एवं मीणा हैं। इसके अलावा राजस्थान में गरसिया और सहरिया जनजातियाँ भी यहाँ मिलती हैं। यहां इन जनजातियों का परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत है–

भील-निवास-क्षेत्र : भील जनजाति राजस्थान के उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, चितोड़गढ़ आदि जिलों में मुख्यतया निवास करती है। यह जनजाति अपनी उत्पति को भगवान शिव से मानती है। भील शब्द 'बील' से बना है जिसका अर्थ 'धनुष' होता है। आज भी भील तीर-कमान धारण करते हैं। कुछेक इतिहासकारों के अनुसार भील समुदाय के अनेक शासकों का किसी समय में इस क्षेत्र में शासन भी रहा था। मेवाड़ तथा वागड़ क्षेत्र में राजपरिवारों में इस समुदाय का आदर रहा है और उन्हें शासक का राजतिलक करने के अधिकार के साथ राज्य द्वारा काफी छूट प्राप्त थी।भील जाति के लोग पहाड़ों की ढालों, चोटियों, घाटियों तथा बेसिनों के क्षेत्रों में निवास करतें है। इनकी बस्तियों को 'फाला' तथा मकानों को 'टापरा' कहा जाता है। एक फाल में एक ही गौत्र के लोग रहतें हैं। फालों का समूह गांव और गावों का समूह 'पाल' कहा जाता है।भोजन और पहनावा : भील जाति के लोगों का मुख्य भोजन मक्के की रोटी, खिचड़ी आदि होता है। इनके अधिकतर पकवान भी मक्के से बने होते हैं। भील पुरुष अमूमन लंगोटी पहने रखतें हैं। [1,2,3]त्योहारों आदि के अवसर पर धोती और अंगरखा पहनतें हैं। भील महिलायें घुमेरदार लहंगा, कंचुकी, ओढ़नी एवं सिर पर गूँथे हुए बाल रखती हैं। कलाई में सफेद रंग की चूड़ियाँ पहनती हैं।भाषा : राजस्थान के वागड़ अंचल में रहने वाले भील 'वागड़ी' (भीली) और मेवाड़ के भील मेवाड़ी बोली बोलते हैं। इस बोली पर गुजराती का भी असर है।परिवार और समाज : भीलों में पितृसतात्मक परिवार होतें हैं। भील लोगों में कई गौत्र जैसे परमार, कटारा, अहाड़ी, भगोरा, धनट, सोलंकी, सिसोदिया, चौहान, राठौड़, राणा, लाटा, कलसूआ आदि हैं। भीलों में प्रत्येक गांव का एक मुखिया होता है जिसे पटेल या गमेती कहा जाता है। भीलों के आपसी विवादों का निपटारा 'गमेती' द्वारा किया जाता है। इसके बाद दूसरा महत्वपूर्ण पद 'भोपा' या 'देवाली' का होता है जो देवी-देवताओं, जादू-टोना और झाड़-फूंक के कार्य करता है। तीसरा प्रमुख पद 'भगत' का होता है जो धार्मिक संस्कारों को सम्पन्न करवाता है।विवाह : भीलों में विवाह संबंध गौत्र से बाहर होते हैं। एक ही 'पाल' में रहने वाले भीलों में विवाह संबंध नहीं होते हैं। भील जाति में 'नाता' प्रथा भी प्रचलित है। विवाह में पंडित की कोई जरूरत नहीं होती। वर-वधू के दाहिने हाथों को जुड़वाकर पानी के घड़े पर पीपल की पत्तियां रखकर दोनों से परिक्रमा करवाई जाती है। भीलों में 'अपहरण-विवाह' भी चलन में है। भीलों में देवर विवाह, विनिमय विवाह, सेवा विवाह और क्रय विवाह भी

प्रचलित है।त्यौहार : होली भीलों का प्रमुख त्यौहार है जो दस दिनों तक मनाया जाता है। इनका प्रमुख मेला 'बेणेस्वर' धाम में आयोजित होता है जहां भील समुदाय के लोग अपने पूर्वजों की अस्थियों का विसर्जन करने त्रिवेणी संगम पर पहुंचते हैं। यहां बड़ा मेला भरता है।लोकप्रचलित परम्पराएं : भील समाज आत्मा और पुनर्जन्म में विश्वास करती है। इस समाज में प्रमुख देवताओं के रूप में इंद्रराज, बागदेव, बाराबीज, गोराजी, कालाजी, गोपालदेव, मारिया माता, भैरूँजी आदि पूजे जातें हैं। डायन, भूत-प्रेत आदि के बारे में भी इस समाज में धारणा रही है जिससे रक्षा हेतु ये ताबीज आदि धारण करते हैं। मेवाड़ क्षेत्र के भील केसरियाजी को अपने आराध्य देव के रूप में पूजते हैं। ये समाज किसी की मृत्यु होने पर उसे जलाता है। भील समाज का गवरी लोकनाट्य बेहद लोकप्रिय है जो चालीस दिनों तक चलता है।अर्थव्यवस्था और जीवन स्तर : भील जाति की आजीविका का मुख्य आधार खेती, आखेट और वन्य-उत्पाद रहे हैं।[4,5,6] खेती के अलावा ये लोग जड़ी-बूँटियों, लकड़ी, शहद, गोंद, कत्था आदि को बेचकर अपना गुजारा चलातें हैं। आजकल इस जाति के लोग मजदूरी भी करने लगे हैं। शिक्षा का इस समाज में अब भी कम चलन है जिसके कारण सामाजिक परिवर्तन काफी धीरे आ रहा है।मीणा जनजाति-मीणा जनजाति राजस्थान की प्रभावी जनजाति है। इतिहास में इस समुदाय के शासक भी रहे हैं। इस समाज की उत्पति के बारे में मान्यता है कि यह एक ऐतिहासिक जनजाति रही है। यजुर्वेद में अन्याय, जुल्म और पापों से रक्षा करने वाले वीरों को 'मेनाल' कहा गया है। 'मीन पुराण' में इस जाति का उद्भव मत्स्य अवतार से माना गया है जो मीणाओं के आदिपुरुष के रूप में माने जाते हैं। कुछेक इतिहासकर मीणा जाति का इन्हें राजपूतों से जोड़ते हैं। इनके गौत्र चोहाण में बागड़ोती, गोठवाल, चीता, राठोड़, आगरवाल, सारंगवाल, सारंगवाल, जागरवाल आदि हैं। मीणा जाति 12 पालों, 32 तडों और 520 गौत्रो में बंटी हुई है।बसाव क्षेत्र : इस जनजाति की ज्यादातर बसावट राजस्थान के करौली, सवाई माधोपुर, दौसा, जयपुर, अलवर, भरतपुर, उदयपुर, टोंक, चितौड़गढ़, सीकर और बूंदी जिलों में मिलती हैं। पहले इस समाज के लोग जमींदार मीणा और चौकीदार मीणा में बांटे जाते थे पर आजकल यह भेद मिट गया है।भोजन एवं पहनावा : मीणा लोगों का सामान्य भोजन मक्का, ज्वार, गेहूं, जौ की रोटी, छाछ, दूध, दही, बाजरे की खिचड़ी, राबड़ी आदि है। मिर्च का खूब प्रयोग इनके खाने में होता है। मीणा पुरुषों के वस्त्र साधारण होते हैं। सिर पर पगड़ी, साफा, अंगरखा, घुटनों तक की धोती, तीन लांग की धोती मुख्य पहनावा है। पैरों में जूतियां पहनते हैं। स्त्रियाँ चांदी के आभूषण कड़ियां पैरों में, करधनी कमर में, राखड़ी सिर पर, बाजूबंद हाथों में और लाख एवं हाथीदांत की चूड़ियां पहनती हैं। घेरदार घुमावदार लहंगा, कंचुकी, छोटी सी औढनी औरतें धारण करती हैं। मीणा औरतों में गोदना उकरवाने का खास चलन है। परिवार एवं विवाह : मीणा जाति में संयुक्त एवं एकल दोनों परिवार मिलते हैं। मीणा अपना गौत्र छोड़कर विवाह करते हैं। नाता प्रथा भी इस समाज में प्रचलित है।धार्मिक मान्यताएं : मीणा जाति में शक्ति पूजा का प्रचलन है। करौली में कैलादेवी, जयपुर में शीतला माता, सवाई माधोपुर में चौथमाता को पूजा जाता है। मेलों आदि के अवसर पर लांगुरिया नृत्य और दंगल का आयोजन होता है।सामाजिक जीवन : मीणा समाज जातीय एकता से काफी मजबूत है और इनकी पंचायत अनेक मामलों का निपटारा कर देती है। आजकल शिक्षा की दृष्टि से यह जाति काफी उन्नति कर चुकी है और अनेक लोग उच्च सेवाओं में कार्यरत हैं। इसके प्रभाव से इनकी आर्थिक हालातों में सुधार हुआ है।[7,8,9]

गरासिया जनजाति-गरासिया जनजाति राजस्थान की तीसरी बड़ी जनजाति है जो कुल जनसंख्या का लगभग सात प्रतिशत है। इस जनजाति की बसावट दक्षिणी राजस्थान में अधिक है। गरासिया राज्य के उदयपुर, राजसमंद, झालावाड़, कोटा, सिरोही और बाराँ जिलों में बसे हुए हैं। इस जाति का उद्भव चौहान और अन्य राजपूतों से माना जाता है।भोजन और पहनावा : गरासिया लोगों का मुख्य भोजन मक्का, गेहूं, जौ और चना आदि है। पुरुष धोती, कुरता, अंगरखी पहनते हैं। महिलाएं घाघरा आदि धारण करती हैं।सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन : गरासिया समाज में पित्रसत्तात्मक परिवार होते हैं। इनके गांवों में पंचायत बनी होती है जो 'पालवी' कही जाती है। इसके माध्यम से आपसी विवाद निपटाए जाते हैं।विवाह : गरासिया समाज में विवाह के तीन प्रकार प्रचलित हैं – मोर बंधिया, पहरावना, तन्ना। मोरबंध विवाह में अग्नि को साक्षी मानकर दूल्हा-दुल्हन फेरे लेते हैं। पहरावना विवाह में फेरे आदि नहीं होते हैं। तन्ना विवाह में दूल्हे के परिवार द्वारा दुल्हन के परिवार को धन देकर विवाह किया जाता है। पुनर्विवाह, विधवा विवाह, नाता प्रथा आदि भी इस समाज में प्रचलित है।मान्यताएं और विश्वास : गरासिया लोग 'शिव' के उपासक हैं। ये जादू-टोना, जंतर-मंतर में काफी भरोसा

करते हैं। इनमें प्रत्येक सफेद पशु गाय, बकरी, घोडा, भेड़ आदि को पवित्र मानते हैं। मृत शरीर को जलाया जाता है।त्यौहार : गरासिया समाज में होली और गणगौर त्यौहार बड़े उत्साह से मनाया जाता है। इस समाज में ‘गरबा’ नृत्य, ‘वालर’ नृत्य और ‘गैर’ नृत्य काफी लोकप्रिय हैं।आजीविका : गरासिया जनजाति के लोगों की आजीविका खेती और पशुपालन पर आधारित है। शिक्षा का इस समाज में अधिक प्रचार नहीं है जिसके कारण ये लोग सरकारी नौकरियों में नहीं आ सके हैं।सहरिया जनजाति-राजस्थान में सहरिया जनजाति के लोग बारां जिले में निवास करते हैं। इनके गौत्र चौहान, देवड़ा, सोलंकी, बुन्देल आदि राजपूतों से मिलते-जुलते हैं।भोजन एवं वस्त्र : इनका प्रमुख भोजन ज्वार, मक्का, जौ और बाजरे से बनी रोटी तथा पुवार सब्जी है। सहरिया पुरुष धोती, अंगरखा एवं कमीज पहनते हैं। औरतें घाघरा, लुगड़ी और लंबी बांह का कुरता पहनती हैं। चांदी के कड़े और हाथीदांत की चूड़ियां पहनती हैं। ये शरीर पर नाम और देवी-देवताओं की मूर्तियां भी गुदवाते हैं।सामाजिक जीवन : सहरिया लोग मजबूत, सुंदर और हष्ट-पुष्ट होते हैं। ये लोग समूह में निवास करते हैं। इनके घर बांस की खपछियों, बांस और घास की छत से बने होते हैं। इनके घरों के समूह को ‘शहरोल’ और गाँव को ‘सहराना’ कहा जाता है। सहरिया जाति में प्रमुख को ‘कोतवाल’ कहा जाता है। वह इनके आपसी विवादों का निपटारा करता है।विवाह : सहरिया जनजाति में खुद की गौत्र में विवाह करने पर रोक है। इनके विवाह से जुड़े सभी संस्कार इसी जाति का पंच सम्पन्न करवाता है।त्यौहार : सहरिया लोग श्रावण, नवरात्रा, दीवाली, होली आदि त्यौहार बड़े उत्साह के साथ मनाते हैं। इनका ‘सहरिया’ नृत्य बड़ा प्रसिद्ध है जिसमें ये शरीर पर रंग-बिरंगी खड़िया लगाकर लचकदार नृत्य करते हैं। बारां के सीताबाड़ी में लगने वाला मेल इस जाति के लिए काफी पवित्र है। सहरिया समुदाय ऋषि बाल्मीकि को अपना कुलदेवता मानते हैं।आजीविका : सहरिया जाति के लोगों की आजीविका कृषि और पशुपालन से चलती है। इसके अलावा ये लोग मजदूरी करके अपना जीवन यापन करते हैं। यह समुदाय आर्थिक रूप से काफी पिछड़ा हुआ है।[10]

विचार-विमर्श

1. मीणा जनजाति — सबसे बड़ी व साक्षर जनजाति

- सामान्य परिचय: यह जनसंख्या की दृष्टि से राजस्थान की सबसे बड़ी (प्रथम) और सबसे प्राचीन व शिक्षित जनजाति है. ‘मीणा’ शब्द की व्युत्पत्ति ‘मीन’ (मछली) से हुई है. ये स्वयं को भगवान विष्णु के ‘मत्स्य अवतार’ का वंशज मानते हैं.
- मुख्य निवास क्षेत्र: जयपुर, दौसा, सवाई माधोपुर, करौली, और अलवर (ढूंढाड़ अंचल).
- धार्मिक एवं साहित्यिक ग्रंथ: मीणा जाति के गुरु मुनि मगर सागर ने ‘मीण पुराण’ नामक ग्रंथ की रचना की थी, जिसमें मीणाओं के 5200 गोत्र (खाप) बताए गए हैं. इनके आराध्य देव भूरिया बाबा (गौतमेश्वर) हैं, जिनकी झूठी कसम ये लोग कभी नहीं खाते.

सामाजिक रीति-रिवाज एवं शब्दावली:

- विभाजन: मीणा मुख्य रूप से दो भागों में बंटे हैं — जमींदार मीणा (खेती-पशुपालन करने वाले) और चौकीदार मीणा (महलों/खजाने की रखवाली करने वाले, इन्हें पुराना वासी भी कहते हैं).
- कीकमार / टिटकारी: संकट के समय एकत्रित होने के लिए दिया जाने वाला विशेष आवाज/नाद.
- छेड़ा फाड़ना: मीणा जाति में प्रचलित तलाक की प्रथा. इसमें पुरुष अपनी धोती का पल्लू फाड़कर स्त्री को थमा देता है.
- नाता प्रथा : विवाहित स्त्री का अपने पति को छोड़कर किसी अन्य पुरुष के साथ रहना.
- झगड़ा राशि: नाता जाने पर नए पति द्वारा पूर्व पति को दी जाने वाली हर्जाना राशि.
- पटेल: मीणाओं के गाँव का मुखिया ‘पटेल’ कहलाता है. इनकी सबसे बड़ी पंचायत ‘चौरासी पंचायत’ होती है.

2. भील जनजाति — सबसे प्राचीन जनजाति

- सामान्य परिचय: यह राजस्थान की सबसे प्राचीन और मीणाओं के बाद दूसरी सबसे बड़ी जनजाति है. 'भील' शब्द की व्युत्पत्ति द्रविड़ भाषा के 'बील' (जिसका अर्थ 'धनुष' है) से हुई है. कर्नल जेम्स टॉड ने भीलों को 'वनपुत्र' कहा था.
- मुख्य निवास क्षेत्र: उदयपुर, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, और चित्तौड़गढ़ (भोमट व वागड़ क्षेत्र).

सामाजिक रीति-रिवाज एवं शब्दावली :[8,9]

- कु / टापरा: भीलों के घर को 'कु' या 'टापरा' कहा जाता है.
- फला / पाल: भीलों के छोटे मोहल्ले को 'फला' और बड़े गाँवों को 'पाल' कहते हैं.
- गमेती / पालवी: भीलों के समस्त गाँवों (पाल) का मुख्य राजा/मुखिया 'गमेती' कहलाता है.
- फायरे-फायरे : भील जनजाति का प्रसिद्ध रणघोष. जब भी इन पर संकट आता है, ये ढोल बजाकर 'फायरे-फायरे' चिल्लाते हुए हथियारों के साथ एकत्र होते हैं.
- पाखरिया: यदि कोई भील किसी सैनिक के घोड़े को मार देता है, तो उसे समाज में 'पाखरिया' कहकर सम्मानित किया जाता है।
- भराड़ी : भीलों की लोकदेवी. विवाह के अवसर पर घर की दीवार पर भराड़ी माता का भित्तिचित्र बनाना शुभ माना जाता है.
- हाथीवेड़ो प्रथा: भील समाज में पीपल, बांस या आम के वृक्ष को साक्षी मानकर किया जाने वाला विवाह. इसमें दूल्हा 'हरज' और दुल्हन 'लाड़ी' कहलाती है.
- भगोरिया उत्सव: होली के अवसर पर भील युवकों द्वारा अपने लिए जीवनसाथी चुनने का विशेष मेला/उत्सव.

भीलों की कृषि पद्धतियाँ :

1. चिमाता : पहाड़ी ढलानों पर वनों को जलाकर की जाने वाली झूमिंग (स्थानांतरित) कृषि.
2. दजिया : मैदानी भागों में वनों को साफ करके की जाने वाली कृषि

- पहनावा: भील पुरुषों द्वारा पहनी जाने वाली तंग धोती को 'ढेपाड़ा', घुटनों तक के लंगोट को 'खोयतू' और सिर के साफे को 'पोत्या' कहते हैं. भील महिलाओं का लाल-काले रंग का घाघरा 'कछावू' कहलाता है.

3. गरासिया जनजाति — तीसरी बड़ी जनजाति

- सामान्य परिचय: यह राजस्थान की तीसरी सबसे बड़ी जनजाति है. 'गरासिया' शब्द की व्युत्पत्ति 'गरास' (यानी टुकड़ा/भूमि) से हुई है.
- मुख्य निवास क्षेत्र: सिरोही (विशेषकर आबूरोड और पिंडवाड़ा तहसील), इसके अलावा पाली और उदयपुर.
- पवित्र स्थान: गरासिया जनजाति माउंट आबू की 'नक्की झील' को अत्यंत पवित्र मानती है. ये अपने पूर्वजों की अस्थियों का विसर्जन इसी झील में करते हैं.

सामाजिक रीति-रिवाज एवं शब्दावली:

- सहलोत: गरासिया जनजाति के मुखिया को 'सहलोत' या 'पालवी' कहा जाता है.
- घेर: इनके घरों को 'घेर' कहते हैं.
- हुर्रे : किसी व्यक्ति की मृत्यु होने पर उसकी याद में बनाया जाने वाला मिट्टी/पत्थर का स्मारक 'हुर्रे' कहलाता है.
- हैलरू : गरासिया समाज के विकास और सहकारी प्रवृत्तियों के लिए काम करने वाली सामाजिक संस्था.
- विवाह के प्रकार: गरासिया समाज में मोर बंधिया (वैदिक रीति से), पहरावना (बिना फेरों के, केवल नाममात्र का विवाह) और ताणना विवाह (लड़की को भगाकर या दूल्हे द्वारा कन्या मूल्य देकर किया जाने वाला विवाह) प्रचलित हैं.
- प्रमुख लोक नृत्य: वालर (बिना वाद्ययंत्र के किया जाने वाला नृत्य), लूर, कूद, मांदल, और जवारा.

4. सहरिया जनजाति — एकमात्र आदिम जनजाति[7,8]

- वैधानिक महत्व: यह राजस्थान की एकमात्र ऐसी जनजाति है जिसे भारत सरकार ने 'आदिम जनजाति समूह' (PVTG – Particularly Vulnerable Tribal Group) में शामिल किया है.
- मुख्य निवास क्षेत्र: बारां जिले की दो तहसीलें — शाहबाद और किशनगंज (99% सहरिया यहीं रहते हैं). 'सहरिया' शब्द फारसी के 'सहर' से बना है, जिसका अर्थ जंगल होता है.
- आराध्य देव: सहरिया जनजाति के आराध्य देव तेजाजी और कुलदेवी कोड़िया देवी हैं. इनके आदिगुरु महर्षि वाल्मीकि हैं.

सामाजिक रीति-रिवाज एवं शब्दावली:

- सहरौल / हथाई: सहरिया जनजाति की बस्ती को 'सहराना' कहते हैं. बस्ती के बीच में बनी सामूहिक चौपाल को 'हथाई' या 'बंगला' कहा जाता है.
- कोतवाल: सहरिया जनजाति के मुखिया को 'कोतवाल' कहते हैं।
- कुशीला / गोपे: अनाज संग्रहण के मिट्टी के कोठड़े 'कुशीला' कहलाते हैं. पेड़ों पर बनाई जाने वाली मचाननुमा झोपड़ी को 'गोपे' या 'टोपा' कहते हैं.
- धारी संस्कार : सहरिया समाज में प्रचलित पुनर्जन्म से संबंधित अनोखा संस्कार. मृत्यु के तीसरे दिन मृतक की राख को ढक कर रखा जाता है, और अगले दिन उस पर बनने वाली आकृति से पुनर्जन्म की योनि का अंदाजा लगाया जाता है.
- कपिलधारा का मेला: केलवाड़ा (बारां) में कार्तिक पूर्णिमा को भरने वाला यह मेला 'सहरिया जनजाति का कुंभ' कहलाता है.
- *विशेष नियम:* सहरिया समाज में कभी भी भीख मांगने की परंपरा नहीं है, और ये लोग श्राद्ध कर्म नहीं करते.

5. डामोर जनजाति

- मुख्य निवास क्षेत्र: डूंगरपुर जिले की सीमलवाड़ा तहसील (इस क्षेत्र को डामरिया क्षेत्र भी कहते हैं).
- विशेष विवरण:
  - इस जनजाति की सबसे अनूठी विशेषता यह है कि डामोर समाज में पुरुष भी महिलाओं की तरह गहने (आभूषण) पहनते हैं
  - इनके गाँव की सबसे छोटी इकाई को 'फला' और मुखिया को 'मुखी' कहा जाता है.
  - छैला बावजी का मेला: पंचमहाल (गुजरात) में भरने वाला यह मेला डामोर जनजाति का सबसे बड़ा मेला है. राजस्थान में इनका मुख्य मेला 'ग्यारस की रेवाड़ी का मेला' (डूंगरपुर) है.
  - डामोर जनजाति अंधविश्वास और वनों पर कम आश्रित है, यह पूरी तरह कृषि और पशुपालन करती है. इनमें बहुविवाह का प्रचलन है और विवाह में 'दापा' (कन्या मूल्य) अनिवार्य रूप से दिया जाता है.

6. कथौड़ी जनजाति

- मूल स्थान: यह मूल रूप से महाराष्ट्र की जनजाति है, जिसे उदयपुर के कोटड़ा, झाड़ोल और सराड़ा तहसीलों में बसाया गया था.
- मुख्य कार्य: खैर के वृक्ष से 'कत्था' तैयार करना इनका मुख्य व्यवसाय है, जिसके कारण इनका नाम कथौड़ी पड़ा.
- विशेष विवरण:
  - कथौड़ी जनजाति के लोग बंदर का मांस बड़े चाव से खाते हैं. ये लोग दूध का सेवन बिल्कुल नहीं करते.
  - इस जनजाति में महिलाएं और पुरुष दोनों साथ बैठकर शराब पीते हैं. महिलाएं मराठी अंदाज में जो साड़ी पहनती हैं, उसे 'फड़का' कहा जाता है.[6,7]
  - इनके मुखिया को 'नायक' कहा जाता है. इनके प्रमुख वाद्ययंत्र 'तारपी' और 'घोरिया' हैं. होली और मावलिया इनके मुख्य लोक नृत्य हैं.

- *सरकारी राहत:* वर्तमान में इस जनजाति की संख्या बेहद कम रह गई है, इसलिए राजस्थान सरकार मनरेगा के तहत कथौड़ी और सहरिया जनजाति को 200 दिन का रोजगार (सामान्य से 100 दिन अतिरिक्त) प्रदान करती है.

7. कंजर जनजाति

- सामान्य परिचय: 'कंजर' शब्द संस्कृत के 'काननचार' (अर्थात जंगलों में विचरण करने वाला) से बना है. यह अपराध प्रवृत्ति के लिए जानी जाने वाली एक घुमंतू जनजाति रही है, जो वर्तमान में हाड़ौती क्षेत्र (कोटा, बूंदी, झालावाड़) में सर्वाधिक निवास करती है.
- धार्मिक आस्था: कंजर जाति की कुलदेवी चौथ माता (चौथ का बरवाड़ा, सवाई माधोपुर) और रक्तदंतिका माता हैं. ये 'हाकम राजा का प्याला' पीकर कभी झूठ नहीं बोलते.

सामाजिक रीति-रिवाज एवं शब्दावली:

- पाती मांगना : कंजर जाति के लोग जब रात को चोरी या डकैती (अपराध) करने जाते हैं, तो उससे पहले ईश्वर/देवी से सफलता का आशीर्वाद मांगते हैं, जिसे 'पाती मांगना' कहा जाता है.
- घरों के दरवाजे न होना: कंजरों के घरों में पीछे की दीवार पर खिड़की या दरवाजा होता है, लेकिन मुख्य द्वार पर किवाड़ (दरवाजे) नहीं होते, ताकि पुलिस के आने पर वे पीछे के रास्ते से आसानी से भाग सकें.
- मरते समय शराब की बूंदें: इस समाज में मृत व्यक्ति के मुंह में शराब की बूंदें डालने की अनूठी परंपरा है. ये शवों को जलाने के बजाय दफन करते हैं.
- लाठी: इनके मुखिया को 'नाइक' या पटेल कहते हैं. चकरी और धाकड़ इनके विश्व प्रसिद्ध लोक नृत्य हैं.

8. सांसी जनजाति

- मुख्य निवास क्षेत्र: सर्वाधिक भरतपुर और अजमेर जिलों में निवास करते हैं. यह एक अत्यंत पिछड़ी और खानाबदोश जनजाति है.
- उत्पत्ति: इसकी उत्पत्ति 'सांसमल' नामक व्यक्ति से मानी जाती है.
- दो उपजातियाँ: सांसी जनजाति मुख्य रूप से दो उपजातियों में विभाजित है — बीजा (धनाढ्य/ऊंचा वर्ग) और माला (निम्न वर्ग).
- कुकड़ी की रस्म : सांसी जनजाति की सबसे विवादित और प्रसिद्ध सामाजिक रस्म. इसके तहत विवाह के समय लड़की को अपने चरित्र की पवित्रता की परीक्षा देनी होती है.
- *विशेष तथ्य:* सांसी समाज में विधवा विवाह का प्रचलन बिल्कुल नहीं है. जब भी समाज में कोई बड़ा विवाद होता है, तो ये लोग 'हरिजन' समाज के लोगों को अपना जज / मध्यस्थ बनाते हैं और उनका फैसला अंतिम माना जाता है. ये लोग सांड का मांस खाना पसंद करते हैं.[5,6]

परिणाम

राजस्थान के बारां ज़िले के एक दूरस्थ क्षेत्र में निवास करने वाले विशेष रूप से कमज़ोर जनजातीय समूह (PVTG) सहरिया समुदाय को 78 वर्षों में पहली बार बिजली मिली है।

- यह प्रगति प्रधानमंत्री जनजाति आदिवासी न्याय महा अभियान (PM-JANMAN) के उद्देश्यों के अनुरूप है, जिसका लक्ष्य जनजातीय समुदायों की सामाजिक-आर्थिक स्थितियों में सुधार लाना है।

मुख्य बिंदु

- सहरिया जनजाति के बारे में:
  - सहरिया जनजाति राजस्थान की 12 अधिसूचित जनजातियों में से एक है और इसे PVTG के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

- सहरिया को कोलारियन परिवार और भीलों की उप शाखा माना जाता है। सहरिया समुदाय को सेहर, सायर, सावर, सोनार, सहरा आदि नामों से भी जाना जाता है।
- भारत की लगभग 7% जनजातीय आबादी राजस्थान में रहती है।
- जनसांख्यिकीय स्थिति:
- 2011 की जनगणना के अनुसार, मीणा, भील और गरासिया समुदायों के बाद सहरिया राजस्थान का चौथा सबसे बड़ा जनजातीय समुदाय है।
- राजस्थान में बारां ज़िला, विशेष रूप से किशनगंज और शाहबाद तहसीलें, सहरिया जनजाति की मुख्य आबादी को आश्रय देती हैं।
- इसके अतिरिक्त, मध्य प्रदेश के मुरैना, शिवपुरी, भिंड, ग्वालियर, दतिया, विदिशा और गुना ज़िलों में भी सहरिया जनजाति निवास करती है।[3,4,5]

निष्कर्ष

रीति-रिवाज और धार्मिक मान्यताएं

- प्रकृति और पूर्वज पूजा: ये जातियाँ मुख्य रूप से प्रकृति, पेड़ों, और स्थानीय लोकदेवताओं (जैसे तेजाजी, भेरुजी, और विभिन्न माता) की पूजा करती हैं। [1, 2]
- दहेज प्रथा का अभाव: सहरिया जैसी पिछड़ी जनजातियों में दहेज न लेने की सामाजिक मान्यता है और यहाँ मृत्यु भोज (श्रद्धा) जैसी कुप्रथाएँ भी नहीं होती हैं। [1]
- अंधविश्वास: कई समाजों में आज भी भूत-प्रेत और टोनटोटके की मान्यता है, जिसके निवारण के लिए ताबीज पहने जाते हैं। [1,2]

संदर्भ

1. "राजस्थान जनगणना संचालन निदेशालय" ।
2. मेहरा, अजय के. (3 अप्रैल 2013). भारतीय राजनीति में उभरते रुझान: पंद्रहवां आम चुनाव . रूटलेज. पृष्ठ 166. ISBN 978-1-136-19855-7.
3. गोस्वामी, राकेश (7 जुलाई 2019)। "राजस्थान में, जनजातीय निकाय अनुसूचित जनजाति के दंपतियों के लिए पारिवारिक न्यायालय के रूप में कार्य करता है" । हिंदुस्तान टाइम्स । 13 मई 2022 को प्राप्त किया गया ।
4. "अधिसूचित अनुसूचित जनजातियों की सूची" (पीडीएफ) । जनगणना भारत। मूल (पीडीएफ) से 7 नवंबर 2013 को संग्रहित। 18 फरवरी 2022 को पुनः प्राप्त ।
5. " [हल हो गया] भारत में कौन सा आदिवासी समुदाय मुख्य रूप से आरा में स्थित है?" टेस्टबुक । 17 नवंबर 2024 को प्राप्त किया गया ।
6. मेहता, प्रकाश चंद्र (2004). भारतीय जनजातियों का नृवंशविज्ञान एटलस । डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस। ISBN 978-81-7141-852-7.
7. कुमार, बच्चन (1997). भील: एक नृजातीय-ऐतिहासिक विश्लेषण । शारदा पब्लिशिंग हाउस। ISBN 978-81-85616-47-6.
8. रेक्लस, एलिसी (1895)। पृथ्वी और उसके निवासी ... डी. एपलटन।
9. "अनुसूचित जनजाति जनसंख्या की जनसांख्यिकीय स्थिति" (पीडीएफ) . nhsrcindia.org .
10. राजस्थान में अनुसूचित क्षेत्र ।